जयप्रकाश चौकसे का रचना संसार : एक अध्ययन
साहित्य, समाज एवं सिनेमा के विशेष संदर्भ में

JAI PRAKASH CHOWKSEY'S CREATIVE WORLD : A STUDY IN SPECIAL CONTEXT TO LITERATURE, SOCIETY AND CINEMA

पीएच.डी. शोधोपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

हिन्दी विभाग

(कला संकाय)

शोध निर्देशिका

डॉ. सविता टाक

प्रवक्ता,

हिन्दी विभाग

एम.एल.वी. राजकीय महाविद्यालय भीलवाडा (राज.)

शोधार्थी

श्रीमती सीमा जोधावत

एम.एल.वी. राजकीय महाविद्यालय

भीलवाडा (राज.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र 2017–18

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

(Reference Ord. 124.11)

1\. शोधार्थी का नाम (अंग्रेजी में) : Mrs. SEEMA JODHAWAT

(हिन्दी में) : श्रीमती सीमा जोधावत

2\. शोध का शीर्षक (अंग्रेजी में) : JAI PRAKASH CHOWKSEY 'S CREATIVE WORLD : A STUDY IN SPECIAL CONTEXT TO LITERATURE, SOCIETY AND CINEMA

(हिन्दी में) : जयप्रकाश चौकसे का रचना संसार : एक अध्ययन साहित्य, समाज एवं सिनेमा के विशेष संदर्भ में

3\. शोधस्थल : एम.एल.वी. राजकीय महाविद्यालय भीलवाड़ा (राज.)

4\. प्रस्तावित शोध का परिचय, महत्त्व एवं उद्देश्य

5\. साहित्य समीक्षा

6\. शोध अंतराल प्रस्तावित शोध के संदर्भ में

7\. शोध परिकल्पना

8\. शोध प्रविधि

9\. अध्याय योजना

10\. आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्रिकाएं एवं सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

10/7/18

शोधार्थी के हस्ताक्षर मय दिनांक
(श्रीमती सीमा जोधावत)
III/2, सिविल लाईन,
राजसमंद (राज.)

10/7/18

शोध निर्देशिका के हस्ताक्षर मय दिनांक
(डॉ. सविता टाक)
व्याख्याता हिन्दी,
एम.एल.वी. राजकीय महाविद्यालय भीलवाडा (राज.)

डॉ. सविता टाक
शोध पर्यवेक्षक
हिन्दी विभाग

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध का परिचय
(INTRODUCTION OF PROPOSED INVESTIGATION)

साहित्य एवं समाज का परस्परोन्मुख स्वभाव, इनका अपनत्व व एकोभिमुखता कतई नवीन अवधारणा नहीं है वरन् इनका गल–बैइयां डाले चलते रहना तो पीढ़ियाँ देखती आयी है। साहित्य के शिशु–काल से समाज उसे पथ प्रदर्शक की भांति राह दिखाते हुए सन्मार्ग की ओर अग्रसित होने को प्रेरित करते रह कर अपने अग्रज की भूमिका का सदैव निर्वाह करता रहा है। इसी मिली–जुली, एक दूसरे में गूंथी समाज व साहित्य की दुनिया में जब एक नवीन संभावना 'सिनेमाई विधा' ने जन्म लिया तो इन दोनों ने अपनी घूंटी से उसका सहर्ष स्वागत किया। "फिल्म" इस शब्द के श्रवण मात्र से कतिपय प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिजीवी–जमात अनायास ही एक उपेक्षा भाव दर्शाते है, तो लगा जरूरत है, किन्हीं ऐसी शख्सियतों की जो इस कथित "इलिट" सभ्य समाज से हो एवं ऐसी पूर्वाग्रह परस्त प्रतिक्रिया से भी उचित दूरी बनाए रखें। इसी जरूरत के दौर में अविर्भाव हुआ इन्दौर की गतिमान रसीली भूमि से निकले एवं सिनेमाई रूचि के चलते अपने ज्ञान, भाव, तर्कों, तथ्यों, मान्यताओं, नवीन स्थापनाओं द्वारा सिनेमा के महत्त्व को तरजीह देते हुए इसके प्रति दुराग्रहों का निराकरण करने के लिए सिनेमाई रोशनायी में डूबी कलम के जादूगर श्री जयप्रकाश चौकसे जी का। आंगल भाषा का यह प्राध्यापक अपने सहज ज्ञान व सरल भाषा में सूक्त वाक्यों का सा निर्माण करते हुए अपनी सतत प्रवाहमान लेखनी की धारा से जनमानस को भिगाते हुए अनायास ही हिन्दी लेखन की कला को भी समृद्ध करते चलता चला गया। प्रखर समीक्षक, उदारमना, गुरू गंभीर लेखन शैली में निष्णात हिन्दी व आंगल दोनों ही भाषा पर समान अधिकारी श्री चौकसे जब अर्द्धशती पूर्व सिनेमा के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रसित प्रतिक्रियाओं से परे सिनेमा के प्रति दुराग्रहों का निराकरण करने प्रवृत्त हुए तो साहित्य, समाज व सिनेमा की इस त्रयी को नई दिशा मिलना तय हो गया। अपने उद्‌भव से सौ साल पूरा कर चुके सिनेमा माध्यम ने अपने स्वर्णिम यात्रा में देश की जनता के मन, विचार, भावों को बनाया, संवारा और परिपक्वता प्रदान की है। विविध भाषा – भाषी प्रांतों की अनछुई सांस्कृतिक विरासत, विशिष्ट भाषा, प्रेरणास्पद व्यक्तित्त्वों, सुरमयी भौगोलिक भू भाग के दर्शन, आंचलिकता का पुट ममतामय ठंडक देता सा प्रतीत होता है। समाज के ज्ञानवर्द्धन व मनोरंजन के लिए जन्मा सिनेमा माध्यम अपने कुलवृद्धों समाज व साहित्य के संगत में कभी सलीके से चला तो कभी उद्‌दण्ड बालक की भांति मचल कर अपना पथ आप ढूंढने लगा, कभी उपयोगी लगा, कभी पथभ्रष्ट

Scanned by CamScanner

करने का आरोपी बना, कभी साहित्य–समाज के गौरव को समृद्ध करता दिखा तो कभी इनके माथे पर लगा बदनुमा दाग बन बैठा, कभी उपदेशक, कभी प्रलोभक, कभी ज्ञान, कभी राग, कभी मित, कभी शत्रु, कहीं ऊंचाइयों को छूता तो कहीं पाताल के स्तर तक गिर चुका, कही पतित, कहीं पावन, कहीं स्नेही, कहीं घृणित जीवन के लगभग हर रूप–रंग का साथी रहा सिनेमा जगत पल–पल चौकसे जी की तीक्ष्ण दृष्टि एवं तेज लेखनी द्वारा देखा एवं दिखाया जाता रहा हैं। अपने मानस में बसे जन्म स्थल बुरहानपुर से उपजा उपन्यास "दराबा", फिर बेकरारी का बयान लिए आया "ताजमहल" उपन्यास, इसी के साथ "महात्मा गांधी और सिनेमा" इस नवीन तथ्यपरक सर्वथा चौंकाऊ विषय पर एक नितांत गंभीर एवं ठोस पुस्तक एवं अनेक लेख, निबन्ध, पुस्तकें इत्यादि। इसी की सार्थक परिणति हुई भारत को सिनेमा व साहित्य के माध्यम से समझने के इनके प्रयास 'परदे के पीछे' से जो कि राष्ट्र स्तर के एक प्रतिष्ठित दैनिक समाचार पत्र में अनवरत तेइस वर्षों से नित नयी इबादत लिख रहा हैं। समाज लोक साहित्य का अथाह सागर है इसमें जो जितनी डुबकियां लगाता है वह उतनी ही लोक साहित्य की मोती, मणियां आदि निधियां निकालकर लाता है। लोकगीत, लोककथाएं, लोकगाथाएं, लोकोक्तियां, कहावतें, मुहावरें आदि लोक साहित्य की निधियां है। चौकसे ने समाज के इस लोक तत्व को पकड़ा है। सिनेमा में साहित्य के इस जन मानस एवं समाज से प्रत्यक्षतः जुड़ाव रखने वाले देसी तत्व का इनके आलेखों में खुलकर प्रयोग होता रहा है। इसी माटी से जुड़ाव ने इस लेखक को जनता का प्रिय लेखक बनाने में भी महत्ती भूमिका निभायी है। गरीब अमीर या ग्रामीण शहरी या फिर निम्न वर्ग उच्च वर्ग का कोई भी वाशिंदा प्रत्यक्षतः या फिर अपने जीवन की या अपने पूर्वजों से जुड़ी स्मृतियों के द्वारा इन लोक साहित्य एवं लोकतत्व से हृदय से जुड़ाव महसूस करता है। अवचेतन में विलुप्त प्रायः यह लोकतत्व जब इन आलेखों द्वारा नजरों के सामने आता है तो मस्तिष्क में कुछ हलचल जरूर मचाता है। यही अपनापन शहरी परिवेश व आजीविका की जद्दोजेहद में लगे अभिजात्य वर्ग को जड़ से जुड़ाव रखना भी इस जीवन के लिए सांस लेने जैसे जरूरी है यह अहसास भी जगाता है। चौकसे की लेखनी जहां भी अवसर मिले देसीपन को निकाल लाने को मचलती हुई सी दिखाई देती है। विदेशी साहित्य के भी अनछुए जड़ों से जुड़े तथ्य, सत्य एवं घटनाएं हमारे आवाम को समय समय पर सहज रूप से 'परदे के पीछे' स्थाई स्तम्भ में देखने को मिलते रहते है। 'तीसरी कसम' का ठेठ देहाती हीरामन चौकसे के अन्तस में ही विराजमान नजर आता है यही वजह है कि हिन्दी या विदेशी साहित्य के उदाहरणों के साथ तात्कालिक समाज, परिवेश का क्रमवार विश्लेषण हमें चौकसे के लेखन में दिखाई देता है।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध का महत्त्व
(IMPORTANCE OF PROPOSED INVESTIGATION)

जयप्रकाश चौकसे राष्ट्रीय स्तर के दैनिक समाचार पत्र में एक स्थायी स्तम्भ में नियमित रूप से जो लिख रहे है इस भांति के फीचर एवं आलेख लगभग सभी समाचार पत्रों में अधिकांशतः सम्पादकीय पृष्ठ पर रोजाना लिखे जाते है। अतः यदि प्रश्न किया जाए कि इस लेखन विशेष में नवीन या विशिष्ट क्या है एवं इनको क्यों इतना महत्त्व दिया जाए तो पहला एवं सर्वप्रमुख कारण है इनके सभी आलेखों की पृष्ठभूमि साहित्य एवं सिनेमा जगत पर आधृत होना। नीति, राजनीति, खेलजगत, धार्मिक पौराणिक प्रसंग, सामाजिक जीवन, मानवीय संबंध, मनोवैज्ञानिक जटिलताएं, आर्थिक गवेषणाएं, आसपास परिवेश की हलचल, स्थानीय राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधियां सभी का ताना बाना सिनेमा के संदर्भो से जोड़कर रचा जाता है। इसी से लेखन में मनोरंजकता भी जुड़ जाती है। ज्ञानवर्धन का यह स्तम्भ विगत बाईस वर्षों से अनवरत् लिखा, पढ़ा, सराहा गया है तो इसका मुख्य कारण जनता के साथ सहज तादात्मय स्थापित हो जाना भी है। विषयों का तारतम्य जब जनता के मानस से जुडता है तो पाठक एवं लेखक की वैचारिक अंतरंगता दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। देश में बेहद लोकप्रिय सिनेमा विधा से जुड़ाव इनके आलेखों को भी जनता की पसंद बनाने में महत्ती भूमिका अदा करता है। 'सिनेमा विज्ञान की कोख से जन्मा कला माध्यम है'[1], सिनेमा व विज्ञान के इस पुत्र–पिता के कलात्मक संबंध की उद्घोषणा करने वाले चौकसे पर हिन्दी साहित्यकार के रूप में प्रश्न उठाने का कोई भी निरर्थक प्रयास सर्वथा औचित्यहीन है। साहित्य पर केवल तथाकथित घोषित साहित्यकारों का एकाधिकार नहीं है। जब तक हम अपने साहित्य सेवियों का ठोस सत्कार करना नही सीखेगें तब तक साहित्य कभी उन्नति नही करेगा।[2] जनरूचि पर गहरी पकड़ रखने वाले फिल्म समीक्षक द्वारा भी नियमित रूप से विगत तेइस वर्षों से अनवरत हिंदी में जो लेख लिखे जा रहे है वह अपने कलेवर, भाव, भाषा, विचार, सार्थक शब्द चयन द्वारा विशिष्ट प्रकार के अपठित गद्यांश का निर्माण कर सुधि पाठकों को उससे नवीन प्रश्नों का सटीक जवाब पाने का आतुर बनाता हैं। लाखों की संख्या में एक ऐसा पाठक वर्ग निर्मित हो चुका है, जो पौ फटते ही सर्वप्रथम समाचार पत्र हाथ में आने के साथ ही "परदे के पीछे" पर प्रथम दृष्टिपात करने के आदि हो चुके हैं। आज किस विषय पर लिखेंगे यह जिज्ञासा सफलता की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। चौकसे जी कुछ हद तक मीर तकी का आभास देते है, जिन्होंने जो बोल दिया वहीं शब्द बन गया इसी भांति

Scanned by CamScanner

आपने भी जो लिख दिया वहीं सार्थक हो गया। आपकी लिखी बात की सत्यता को किसी कसौटी पर परख की जरूरत नहीं, प्रबुद्ध पाठक का आप पर विश्वास ही आपकी सच्चाई व सफलता का जीवन्त साक्ष्य है। समाजशास्त्री डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने 'समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाओं व लक्ष्य जो अतीतिक अधिमान्यताएं बन जाती है, को मूल्य माना है'।[3] सामाजिक व्यवहार के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों के साथ गैर–मूल्य भी विद्यमान है। व्यक्तिगत स्तर पर कानून व सामाजिक संहिताओं की अवमानानाओं का उल्लंघन किये जाने से अपराध, शोषण नीति, सामूहिक हित के विपरित समूह आदि का पैर पसारने का प्रयास चौकसे अपने चाक– चौबन्द मुस्तैद नजरों द्वारा क्षणांश में परख लेते है एवं इनके प्रति निर्मम लेखनी की मार समाज को अनैतिक से बचाने को प्रवृत्त रहती है। 'परदे के पीछे' कॉलम किश्तों में छपनें वाली किताब है, जिसका कथानक आज का भारत है।[4] ताजुब्ब की बात यह है कि सिनेमा जैसी चमक–दमक की दुनिया में रच बसकर भी वह अपने अंदर के इंसान और उसके दिलों की धड़कनों को शुमार करना नही भूले। सिनेमा में पलायनवादी रवैये को देश में आजादी के बाद आर्थिक तथा सामाजिक बदहाली के साथ–साथ समाज में फैलती अराजकता में होशोहवास खोते भी है। यही दर्दमंदी चौकसे जी की तहरीरों की विशेषता है और इसी से वह अंतर उभरता है, जो पत्रकारिता में साहित्यिक रंग भरता है। 'चौकसे जी ने सिनेमा जैसे लोकप्रिय माध्यम को गंभीर अध्ययन बना दिया है, उनके व्यक्तित्त्व की गहराइयों ने उनके शब्दों को गहरा और संजीदा बना दिया है, इसी अंदाज ने इस पुस्तक को अखबारी गपशप के दायरे से निकालकर इसे साहित्य, संगीत, चित्रकला, पौराणिक, धार्मिक, संस्कृति और सियासत का दस्तावेज बना दिया है'।[5] आवाम को ज्ञान–मनोरंजन देने के वृहद उद्देश्य से रचा यह मायावी संसार कतिपय साहित्यिक–मना लोगों द्वारा खुलेमन से अपनाया भी जाता रहा हैं। सर्वश्री विमल रॉय, बलदेवराज साहनी, निदा फाजली, कवि नीरज, खुशवंत सिंह, राजेन्द्र सिंह बेदी, साहिर लुधियानवी, मजरूह सुल्तानपुरी, शैलेन्द्र, इन्दीवर, असद भोपाली, शकिल बदायूंनी, हजरत जयपुरी, कमर जलालाबादी, कैफी आजमी, भरत व्यास एवं आनन्द बक्षी। चलचित्र के लिए लिखे इन गीतकारों की रचनाओं ने शब्द, भाषा, शैली, भावों पर अपनी मजबूत पकड़ के साथ सहजता से जनता के मानस पर अपना प्रभुत्व अनायास ही स्थापित कर लिया। भारतीय सिनेमा शुरूआत से ही एक सीमा तक भारतीय समाज का आईना रहा है जो समाज की हकीकत को बयां करता आया है। भारतीय सिनेमा ने 'शहरी ग्रामीण क्षेत्रों की सीमाओं को लांघते हुए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। विश्व के प्रत्येक भू–भाग में हिन्दी फिल्मों व गीतों की लोकप्रियता सर्वविदित है'।[6] इसी प्रकार एक

Scanned by CamScanner

लम्बी परम्परा रही है साहित्यकारों के सिनेमा से जुड़ने की। इसी कड़ी में पांच दशक पूर्व जनवाणी बनने एवं जनसमूह की चेतना को एक सार्थक दिशा देने आए चौकसे जी पर माँ शारदे का वरद् हस्त मानो सतत् आशीर्वाद लुटाता रहता हैं। कला, संस्कृति, समाज, सभ्यता, साहित्य, परिवार, नीति, राजनीति, नियम, कानून, व्यष्टि, समष्टि, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, शैक्षिक, नैतिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, अभ्यन्तर, वाहय इत्यादि इस अनन्त ब्रह्माण्ड का कोई भी ऐसा पहलू शेष ना रहा पाया होगा, लेखन पथ की कोई ऐसी गली या मोड़ ना रहा होगा, जहां आपके पावन कदम ना पड़े हो। लेखन की विविध विधाओं यथा निबंध, व्यंग्य, लेख, कहानी, कविता, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृतांत, डायरी लेखन, आलोचना, समीक्षा, कमोवेश हर प्रकार का हर संभव शैली में नवीन रूप में दर्शन करना हैं तो आप अनायास ही "परदे के पीछे" इस संक्षिप्त परिशिष्ट में अपने बौद्धिक ज्ञान की क्षुधा का पूर्ण तृप्ति के साथ शमन कर पाएंगे। किसी भी व्यक्ति के ज्ञान, आपसी सम्बंधों, प्रेम, तिरस्कार, छल, समझ, वर्जनाओं, होना चाहिए या नहीं होना चाहिए के द्वन्द्वों से निकलने के लिए चौकसे का रोजाना प्रस्तुत ये दरबार आपको आपके हां–ना, किन्तु–परन्तु के चक्रव्यूह से निकलने का सही चयन पूरे तथ्यपरक व ठोस आधार पर देगा। मानव अन्तर्मन के अमूर्त भाव या जीवन की ठोस सच्चाई, चेतन या अवचेतन मन में छिपा कोई भी मनोभाव कुछ भी ऐसा नहीं जो चौकसे जी की कलम ने अछूता छोड़ा हैं। उम्र के आठ दशक पर पहुंच रहा एक जिज्ञासु, निष्ठावान, समदर्शी, सामाजिक सरोकारों से जुड़ाव रखने वाला, पौराणिक मान्यताओं का पक्षधर, नवीन के प्रति खुले मन से प्रस्तुत, गलत पर सख्त, सत्य पर अडिग ये छिद्रान्वेषी समीक्षक लेखक अपने एकत्व, अपनी विशिष्टता व अद्वितीयपन के सम्मोहन में खींचकर हमें अपने व्यक्तित्व व कृतित्व के सारगर्भित साहित्य के अमृत का पान करवाता है तो साथ ही साथ कभी ना नष्ट होने वाले विष के कसैले छीटों का भी अस्तित्व समानान्तर रूप से यत्र–तत्र आच्छादित है यह आगाह भी करता चलता हैं। होली–दिवाली, हारी–बीमारी विगत तेइस वर्षों में एक भी अवकाश ना रखने वाला यह नियमित लेखक हमें उद्दीप्त करता है इस विषय पर आगे बढ़ने के लिए। एक शोध विषय के रूप में हमारा विषय चयन हमारे उद्देश्य को गरिमा प्रदान करता हैं। इस शोध कार्य के महत्त्व का निर्णय भी सुधि पाठक चौकसे की लेखनी में विस्मयकारी रूप से जो करूणा एवं विश्वास आत्मा के प्रच्छन्न रूप में विराजमान है एवं सतत प्रवाहित ऊर्जा के रूप में प्रभावमान है, उसी आधार पर करेंगे। सृजन करने वालों का रहस्यमयी भीतरी संसार हमेशा मेरे लिए कौतूहल का विषय रहा है। कलाकार की प्रेरणा और ऊर्जा का स्त्रोत जानने में हमेशा मेरी रूचि रही हैं। प्रतिभा परम्परा से प्रेरणा लेकर परम्परा

Scanned by CamScanner

को ही विकसित करती हैं। कलाकार के मन पर पड़े सारे प्रभाव और प्रेरणा के छिलके उतारने पर हम विस्फोटक प्रतिभा के एक कण पाते हैं, जो सर्वथा उसका अपना हैं। विभिन्न प्रभावों व प्रेरणा स्त्रोतों की परतें हटाने पर जो थोड़ा सा आप पायेंगे वह मेरा अपना है और ऐसा ही कुछ सारी रचनाओं के केन्द्र में होता हैं।[7] "प्रस्तावना कम, क्षमा–याचना ज्यादा" प्राक्कथन की ये पंक्तियां उत्सुकता जागृत करती है, रचनाकार की प्रतिभा का उत्स खोजने, इनके लेखन के वैशिष्ट्य के मूल नैसर्गिक स्त्रोत के अन्वेषण की, सारगर्भित लेखों का प्रेरणा स्त्रोत जानने, इनके ऊर्जावान व्यक्तित्व के इनके कृतित्त्व पर पड़े अक्स द्वारा एक नवीन विरली ही लेखन शैली के प्रतीक बन चुके श्री जयप्रकाश चौकसे जी के साहित्य के सामाजिक, साहित्यिक तानेबाने को समझने की। यूं तो मनुष्य अपने जीवन में अपने जीवन मूल्यों की स्थापना करता है, किन्तु साहित्य मनुष्य के जीवन में सुलभ आदर्श मूल्यों को स्थापित करने में अधिक कारगर सिद्ध हुआ है।[8] सिनेमा के प्रति जुड़ाव व समाज के प्रति उत्तरदायित्व के साथ चौकसे जी गोष्ठियों, सभाओं में सहभागिता एवं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेखन, सम्पादन द्वारा जनता को सिनेमा के आस–पास की, अन्दर की एवं प्रत्यक्ष दिख पड़ती दुनिया के परदे के पीछे छिपी मायावी संसार की अय्यारी–सी सच्चाई से रूबरू कराते रहें है। विगत तेइस वर्षों से परदे के पीछे द्वारा वे जन–मानस में रचे बसे सिनेमा संसार पर अपनी युगपरक पैनी दृष्टि, सारगर्भित विचार शैली एवं कथ्य–प्रस्तुति की परिष्कृत साहित्यिक शैली से त्वरित व यथार्थपरक टिप्पणी के द्वारा जागरूकता का अघोषित शंखनाद् करते रहे हैं। ठेठ ग्रामीण लोक जीवन से जुड़े अनगढ़ मुहावरों से लगाकर अत्यन्त अभिजात्य वर्ग तक अन्तर्राष्ट्रीय उदाहरण व वाक्यात पेश करने का उनका सर्वथा सहज अंदाज हिन्दी साहित्य को समृद्ध बना रहा हैं।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध के उद्‌देश्य
(OBJECTIVES OF PROPOSED INVESTIGATION)

- जनता के लेखक चौकसे जी पर शोध करने का मेरा महत् उद्‌देश्य यही है कि एक हिन्दी साहित्यकार के रूप में उनकी मान्यता स्थापित हो। उनके द्वारा किए गए लेखन को हिन्दी साहित्य जगत की धरोहर के रूप में देखा जाएं एवं साथ ही सिनेमा में भी साहित्यिक धूप–छांव का उचित आंकलन हो। जयप्रकाश चौकसे अंग्रेजी भाषा का प्राध्यापक होने एवं रोजमर्रा में बोलचाल की भाषा आंग्ल होने के बावजूद आपकी हिन्दी में लिखी कृतियां आपको हिन्दी भाषा के साहित्य का भी जानकार एवं सक्षम हस्ताक्षर ठहराती है।
- साहित्य समाज का दर्पण माना गया है। किन्तु अपने तमाम कमतरियों के बावजूद अनादि काल से चले आ रहे साहित्य ने अपने नाम के साथ एक उच्च गरिमा भाव को पकड़े रखा हैं, जबकि इन्हीं की कुक्षि से जन्मा यह परिवर्तनशील चंचल बालक सिनेमा हमेशा हर पल अच्छे बुरे की तुला में रखा जाता रहा है। साहित्य एवं समाज पर अपना प्रभाव छोड़ने के बावजूद इसे समग्र रूप से गरिमामय पद की स्थायी प्राप्ति होना दूर की कौड़ी ही रहा हैं।
- कला जगत की सिनेमा विधा को भी हीनता के पूर्वाग्रह से निकाल मुख्य धारा का सक्षम माध्यम माना जाए ऐसा प्रयास प्रस्ताावित शोध में किया जाएगा।
- लेखन की अपेक्षाकृत कुछ नवीन विधा फीचर लेखन की व्यापक व्याख्या भी की जाएगी।
- चौकसे जी के कृतित्त्व विशेष रूप से 'परदे के पीछे' के अध्ययन से साहित्य, समाज, सिनेमा के आपसी रिश्ते को समझना प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्‌देश्य होगा। इनका एक दूसरे से जुड़ाव एवं परस्पर सह आश्रित संबंध से हिन्दी साहित्य में क्या कुछ नया जुड़ा है एवं साहित्य जगत किस प्रकार नवीन आकार पा रहा है इसके विश्लेषण द्वारा आधुनिक गद्य के स्वरूप को समझने का प्रयास किया जाएगा।

Scanned by CamScanner

साहित्य समीक्षा
(REVIEW OF LITERATURE)

नए ज्ञान, विचार, परिकल्पनाओं का उत्स (मूल बीज रूप) कुछ कदम पीछे जाने पर मिलता है, जिसके आधार पर शोध परियोजना का दिशा निर्धारण किया जाता है। शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक पोषण की जरूरत को शोध परियोजना की समीक्षा द्वारा पूरा किया जाता है। शोधार्थी द्वारा चयनित विषय को केन्द्र में रखते हुए पूर्व में कोई विशिष्ट शोधग्रन्थ उपलब्ध नहीं है एवं इसका एक मात्र स्पष्ट कारण शोध विषय की नवीनता है, जो इसकी विशिष्टता भी है। साहित्यकार के कृतित्व विशेष पर शोध कार्य बेहद प्रचलित रहा है। इस शोध कार्य के लेखक के कृतित्व पर पूर्वस्थापित प्रतिमानों एवं वर्तमान संदर्भो में जो शोध किया जाएगा उसकी प्रेरणा पूर्ववर्ती साहित्यकारों के कृतित्व पर हो चुके शोध कार्यों से भी ली जाएगी।

शोध अंतराल प्रस्तावित शोध के संदर्भ में
(RESEARCH GAPS IDENTIFIED IN THE PROPOSED FIELD OF INVESTIGATION)

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी ने एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। अतः इस शोध में चौकसे के कृतित्व के प्रकाश में साहित्य, समाज, सिनेमा की त्रयी का ज्ञान मनोरंजन की भरपूर मात्रा के साथ मिल सकेगा। इस शोध में साहित्य – जगत, दर्शन, मानविकी, मनोविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, इत्यादि कई ऐसे नए बिन्दू उभरकर सामने आएंगे जो अब तक प्रच्छन्न ही रहे है। इसलिए प्रस्तावित शोध, शोध अंतराल को पाटने का काम करेगा।

शोध परिकल्पना
(MAJOR HYPOTHESIS)

एक मानव कृत गतिविधि जो बौद्धिक क्षमताओं को किसी जांच के लिए प्रयोग में लाए वही शोध हैं। यह एक क्रमबद्ध वैज्ञानिक जांच या खोज की कला है, जो किसी एक विषय के इर्द–गिर्द विकसित की जाती है एवं इसका उद्देश्य ज्ञान के सामान्यीकरण के लिए होता है। शोध विषय के लिए हमने जयप्रकाश चौकसे के लेखन में समाज, सिनेमा व साहित्य के मिले जुले प्रभाव को चुना है इस प्रकार के विषय का चयन यकायक स्वतः स्फूर्त नहीं है वरन् ऐसा विषय या समस्या को लेकर पूर्व में भी शोध होते रहे हैं। हमें लगता है कि

Scanned by CamScanner

अपने मन्तव्य में हमारे द्वारा चयनित यह विषय व्यापक हैं। स्थानीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस ज्ञान का विस्तार एवं उपयोगिता निसन्देह स्वीकार्य होगी। भावी समाज, नीति, ज्ञान व शोध पद्धति के लिए यह विषय अपने वृहद् उद्देश्य के चलते सहायक सिद्ध होगा। हमें विश्वास है कि नये ज्ञान को प्राप्त करने की दिशा में हमारा यह सजग एवं क्रमबद्ध यह शोध प्रयास हिन्दी साहित्य को चौकसे के कृतित्त्व से प्रत्यक्षतः परिचित करवाते हुए नवीन ज्ञान अभिवृद्धि में सहयोगकारी होगा। चयनित विषय की सुनिश्चित दृढ़ आलोचनात्मक अवधारणाएं है। यह विषय एक व्यक्ति विशेष उनकी परिस्थितियों, हमारे समाज व समूह की स्थितियों का सही वर्णन कर पाने में सक्षम होगा। यहां अनुभूति एवं सामाजिक यथार्थ में कोई अन्तर नहीं हैं। आधी आबादी के प्रति आपके हृदय का सलोनापन, नारी गरिमा के लिए उच्च सम्मानजनक भाव आपके आलेखों में ताने–बाने की तरह बुने दिख पड़ते हैं। अपनी पुस्तक का समर्पण भी आपने महिला वर्ग को किया है, जो आपकी नारी समाज के प्रति सकारात्मक सोच का ही प्रतिफलन है। 'अपनी सहधर्मिणी के साथ दाम्पत्य के सुनहरे सफर की साक्षी यह पंक्तियां उनकी अपनी सहगामिनी के प्रति अथाह श्रद्धा को भी अनायास प्रकट कर जाती है तैंतालीस वर्षो से निरंतर जारी गुरिल्ला युद्ध में जीतकर हारने का अभिनय करने वाली अपनी पत्नी श्रीमती उषा हरिकृष्ण प्रेमी चौकसे को समर्पित यह रचना शांति की याचना करने वाले सफेद झण्डे की तरह नहीं ली जानी चाहिए, क्योंकि यह युद्ध फिल्म की तरह मनोरंजक है'।[9] अपने परिवार की दूसरी, तीसरी पीढ़ी के प्रति सद्भावनाएं सम्पूर्ण समाज व देश की भावी पीढ़ी के लिए भी विस्तृत होते दिखाई देती है। अपनी पुस्तक का समर्पण भी अपनी पुत्रवधु और पौत्री को इस आशा के साथ करते है कि जैसे भारत माता, महात्मा गांधी और सिनेमा जगत ने उनका पथ प्रशस्त किया, वैसे ही नवीन पीढ़ी का भी करे।[10] महिलाओं के प्रति सम्मान इनके सद् संस्कारों एवं आधी आबादी के प्रति आदर का द्योतक है। 'श्रीमती कृष्णा राजकपूर एवं श्रीमती सलमा सलीम खान को इन विलक्षण महिलाओं को देखते ही मन में श्रद्धा के भाव आते हैं'।[11] नयी सदी के युवा लेखक भी नारी सशक्तिकरण पर बल देते है। चौकसे की लेखनी के द्वारा भी ऐसा सदा किया जाता रहा है। 'सह अस्तित्व पर आधारित विश्व की कल्पना कराने वाला महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं संवैधानिक आदि पक्षों को सम्मिलित किया जाता है'।[12] नारी शक्ति के प्रति पूज्य एवं आदर्श भाव रखने का ही यह परिणाम दिखता हैं कि एक प्रकार की जीवन शक्ति एवं ऊर्जा भी आप उनसे ग्रहण करते हैं। 'बुरहानपुर से बहती हुई

Scanned by CamScanner

ताप्ती नदी (इस प्रार्थना के साथ कि कोई उसे प्रदूषण मुक्त करेगा) और मेरी मां नर्मदा देवी को'।[13]

ज्ञान पिपासु जिज्ञासु लेखक जो नित नवीन सीखने को तत्पर है, एक सहृदय व्याख्याता जो सीधे पाठक के मनोमस्तिष्क में उतरता है, सुधि समीक्षक चौकसे ने समीक्षा क्षेत्र के सैद्धांतिक प्रतिमानों का सरलीकरण कर आज के जीवन एवं साहित्य में उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग को अपनी विशिष्ट भाषाशैली एवं विषय को व्यापक विस्तार देते हुए मूल भावना का प्रसार करते हुए सार्थक कर दिखाया हैं। साहित्य के स्थापित क्लिष्ट प्रतिमान या काव्यशास्त्र एवं भाषाविज्ञान का गंभीर ज्ञान भी आपकी रचनात्मक गद्य की गहराई को मनोरंजन शैली में ढालकर आमजन के लिए सहज प्राप्य हो जाता है। सिनेमा जगत में गहरी पैठ के चलते इस क्षेत्र की जानकारियों का जखीरा भी है। रोजाना पठनीय एवं लोकप्रिय स्तम्भ में साहस, सत्य नवीनता, ज्ञान का भरपूर सम्पूर्ण समावेश गागर में सागर को चरितार्थ करता है। गंभीर चिंतन के साथ परोसी गयी उनकी मनोरंजन की थाली में सब कुछ होता है। समग्र विषय की चपाती, इतिहास की दाल, वर्तमान के चावल पुलाव, राजनीति का चटपटा आचार, हास्य की मिठाई, तानों का पापड, दर्शन की सब्जी, फिल्मों का रायता और फिर सबसे खास उनकी अपनी शैली का पान—मुखवासा, सुधिजन तो बस ये ललचाती थाल देख टूट पड़ते है। इसका चटकारा लेने में और इससे पोषक तत्व ग्रहण कर अपनी बौद्धिक क्षुधा शांत करने में देश में ऐसे असंख्य समूह है जिनकी दैनिक चर्चा का विषय "परदे के पीछे" में आज छपा आलेख होता है। जन समूह में इसके बारे में इसके हर शब्द पर व्याख्या, टीका टिप्पणी की जाती है। इसके विषय एवं उसका प्रस्तुतीकरण का खरापन पाठकों की बहस द्वारा और भी ज्यादा निखरता है। हजारों पाठक ये स्वीकार करते है कि अखबार में प्रकाशित एक कॉलम विशेष के लिए वे ये अखबार खरीदने लगे हैं। हजारों पाठक यह भी कहते है कि इस समाचार पत्र के हाथों में आते ही अनायास ही वे ये कॉलम खोल लेते है एवं इस पर दृष्टिपात करने के बाद ही वे बाकी खबरों पर नजर डाल पाते है। स्वनाम धन्य स्थापित बेहद प्रतिष्ठित हिन्दी साहित्य जगत के नामचीन लेखक, कवि, आलोचक इत्यादि भी सामाजिक माध्यमों में इनके लेखन की सराहना मुक्त कण्ठ से करते है। 'फिल्मी गीतकारों, संगीतकारों द्वारा अलग अलग भाषाओं के शब्द, मुहावरें हिन्दी में आये जो काम अक्षर साहित्य नहीं कर पाया, वो चित्र साहित्य ने कर दिखाया'।[14] लिखित साहित्य को जब बिम्ब रूप में सिनेमा माध्यम में ढाल कर रूपहले परदे पर यह प्रस्तुत किया जाता है तो भाषा के स्थान पर यह दृश्य बिम्ब विचारों व मानसिक स्थितियों का सटीक चित्रण कर पाने में पूर्णतः सफल नहीं हो पाते, ऐसा

Scanned by CamScanner

पूर्वानुमान एवं आंकलन साहित्य विशेषज्ञ एवं सुधिजन करते है। लिखित रूप में जहां स्वप्न, कल्पनाएं, स्मृतियां, चाहत, विचार, मनोवैज्ञानिक गतिविधियां, भावात्मक बातें पढ़ने के साथ ही हमारे मनो मस्तिष्क को एक दृश्यात्मक कल्पना से भरती चलती है, वहीं जब इन्हें साकार रूप में रजत पट पर दृश्यमान रूप में साक्षात् पाते है तब हमारी कल्पनाशीलता व विचारात्मक सोच वही कुन्द हो जाती है। सिने–दर्शक के इसी द्वन्द्व को चौकसे जी जगाते है। इस अन्तराल से जा भ्रम उत्पन्न हो सकता है, उसे दूर करने का प्रयास चौकसे जी की समीक्षात्मक बुद्धि उनकी सक्षम लेखनी की सहायता से करती है। लिखित बातें जो परदे पर कलाकारों के अभिनय, संगीत, ध्वनि, सिनेमेटोग्राफ, कथानक चरित्र, संवाद गति, दृश्यात्मकता, मनोरंजन, मनोविज्ञान, पार्श्व संगीत, हाव–भाव, वेश–भूषा, चाल–ढाल द्वारा प्रस्तुतिकरण के दौरान जो छूट गया है उसको सहजता से पाट जाते है चौकसे जी के आलेख।

देश की संस्कृति विगत कुछ दशक से युद्ध की सी विभीषिका झेल रही है। इसमें भी गत अर्द्धशती से तो सांस्कृतिक नर संहार का सा भयावह मन्जर नजर आता है। भारत देश अपनी उच्च सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए विश्व में सम्मानजनक स्थान रखता है। हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार उच्च मानवतावादी मूल्य आधारित थे। आज आयातित विदेशी संस्कृति ने हमारी अपनी सर्वग्राह्य, सर्वपूज्य, प्रतिष्ठित संस्कृति को पदस्थापित कर दिया है। आज देश के नौजवान एवं प्रौढ़ पीढ़ी भी अपने रहन–सहन, वेशभूषा, खानपान, बोलचाल, रीति–व्यवहार, नियम–नैतिकता, जागना–सोना, हाव–भाव, विचार–व्यवहार के परम्परागत स्वरूप को पार्श्व में डाल कर नवीन पाश्चात्य भौतिकतावादी की चकाचौंध में डूबती जा रही है। भारतीय समाज एवं स्थापित सामाजिक व्यवस्था को उलट पुलट होते देखा जा रहा है। समाज का यह सांस्कृतिक प्रलय जैसा बदलाव साहित्य एवं सिनेमा पर भी दिखता है। सिनेमाघर में दर्शक की प्रतिक्रिया फिल्म के साथ ही समाज के बदलते मिजाज की भी जानकारी देती है। सारांश यह है कि सिनेमा में समाज अपने बदलते स्वरुप में प्रकट होता है, अर्थशास्त्र के उतार चढ़ाव भी बॉक्स ऑफिस आंकड़ों में जाहिर होते है। 'राजनीति के गलियारों की फुसफुसाहटें भी सिनेमा के ध्वनि–पट्ट में मुखर होती है, मानो कि भारत को सिनेमा के माध्यम से भी समझा जा सकता है'।[15] हिन्दी साहित्य पर क्रमवार दृष्टिपात करे तो यह संक्रमण स्पष्टतः परिलक्षित होता है। समाज में व्याप्त गतिविधियों का चित्रण साहित्य करता है। समाज सम्मत एवं समाज विरोधी दोनों विचारों को जन समूह के सामने रखता है। हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विधाओं में सामाजिक व्यवस्था का वास्तविक परिदृश्य दिखाया गया है।[16] सिनेमा के सन्दर्भ में भी कमोबेश यही बदलाव देखने

Scanned by CamScanner

को मिलता है। जीवन–शैली का यह बदलाव, भौतिकवाद की अन्धी दौड़, समयाभाव की पूर्वाग्रही सोच, रिश्तों में विश्वास की कमी, संयम का अभाव, पारिवारिक विघटन, सामाजिक उत्तरदायित्वों पर ध्यान न देना, आधुनिकरण की अंधी दौड़ में सभी पुरातन को अवधिपार मान लेना इत्यादि अनेक परिवर्तन साहित्य, समाज व सिनेमा में पुरजोर तरीके से अपना प्रभाव दिखाते है। एक जमाना था जहां संयम व नैतिकता ही जीने के प्रमुख मूल्य माने जाते थे। तब अर्थोपार्जन भी नीति से किया जाता था एवं अर्जित धन को भी बचाया जाता था। चार्वाक दर्शन के इस दौर में अपनी चादर से लम्बे पैर फैलाना, ऋण लेकर भी घृतपान करना, दिशाहीन अंधी दौड़ में भागता मनुष्य सकारात्मक सोच से भी परे जा रहा है।

संचार के सामाजिक माध्यम (सोशल मीडिया) का बढ़ता उपयोग लोगों को वास्तविक ज्ञान से दूर एक आभासी दुनिया की ओर खींच रहा है, जिसकी सच्चाई का किसी को पता भी नहीं है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि 'सामाजिक माध्यम ने लोगों की पढ़ने की आदत को कम कर दिया है'।[17] विगत कुछ दशकों में संचार साधनों की सुविधा इस हद तक बढ़ रही है कि हद ही पार हो चुकी है। इन्टरनेट के प्रगतिवादी दौर में जहां समस्त ब्रह्माण्ड का ज्ञान एक अंगुली मात्र के इशारे पर प्रस्तुत है, वहां लिखित ज्ञान एवं अध्ययनशील पाठकों की संख्या में भी जबरदस्त कमी आयी है। विगत कुछ दशकों में साहित्यिक पत्रिकाओं, पुस्तकों के प्रकाशन में बड़ी गिरावट एवं इनकी बिक्री में व्यापक कमी ने हिन्दी साहित्य से जुड़े विद्वजनों की पेशानी पर बल डाला है। आज अनुदित के नाम पर जो पुस्तकें बिक रही है नयी पीढ़ी के लिए तो बस वही साहित्य है। भारतीय विशेषतः हिन्दी साहित्य के कमतरी के इस मौजूदा दौर में नयी पीढ़ी के लिए उपलब्ध पुस्तकीय रूप में जो कुछ उपलब्ध है वह अनुदित ज्यादा है। हैरी पॉटर, चेतन भगत, शोभा डे इत्यादि सनसनीखेज, सतही, विचार शून्यता एवं गंभीर विषय वस्तु की हीनता के कथित आधुनिक शैली के उपन्यास कथाएं हिन्दी साहित्य के गुरू गंभीर गरिमामयी स्वरूप के दूर–दूर भी ठहरती नहीं आती है। क्षणिक सुख प्राप्ति की पूर्ति भले इनसे हो किन्तु जो साहित्य व लेखन दिल की गहराईयों से उतर आत्मा को छूता है, वह यह नहीं है। दृश्य रूप में जब जहां जैसा जितना चाहो मिल रहा है तो ठहराव के साथ पाठन करने का माद्दा नवीन पीढ़ी में नहीं दिख पड़ता। गंभीर एवं वास्तविक पाठकों का अभाव इस युग की पीड़ादायक सच्चाई है। ब्रह्माण्ड की समस्त जानकारियां, ज्ञान–विज्ञान, मनोरंजन, संवाद पलक झपकने से पहले प्रस्तुत करने में सक्षम संचार के बहुआयामी माध्यम कुछ सार्थक पाने के लिए पूरा संयम एवं समय देने के सिद्धान्त को लील चुके है। चौकसे जी के गवेषणालब्ध लेख अपने लघु कलेवर

Scanned by CamScanner

में उस सटीक साहित्य को प्रस्तुत करते है। मनोरंजन के साधन सिनेमा माध्यम ने कला के साथ भाषा को भी जनता में परोसा है। अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में भी हिन्दी सिनेमा एवं गीतों की लोकप्रियता हिन्दी भाषा प्रसार का कार्य अनायास ही करती रही है। 'स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् इन गीतों को देखकर पहली बार ऐसा लगा कि हिन्दी का पूरे राष्ट्र की भाषा का फिल्म क्षेत्र में भी जैसे स्वागत और सम्मान हुआ हो'।[18]

'समाज लोक साहित्य का गहरा सागर है'[19] भाषाएं एवं संस्कृतियां सदैव तरल रही है। 'विद्वानों ने सभ्यता को गेहूँ और संस्कृति को गुलाब नाम दिया है'।[20] पुरातन होते हुए भी वह देश काल आधुनिक परिवेश के मिले जुले प्रभावों से नित नवीन स्वरूप धारण करती है। अतः आज की साहित्य में प्रयुक्त भाषा भी दैनिक जिन्दगी में काम आ रही चलताऊ हिन्दी ही ज्यादा है। इसमें द्विवेदीयुगीन भाषाई शुद्धता के उच्च प्रतिमान या व्याकरणीय आदर्श तलाशना समीचीन नहीं होगा। भाषा समाजीकरण की देन है। बिना मातृभाषा पर अधिकार जमाएं, आप देश की माटी से जुड़ नहीं सकते। भाषा संस्कृति को उजागर एवं व्यक्त करती है।[21] समय के प्रवाह में आज हिन्दी साहित्य की भाषा शुद्धता के मापदण्ड की सीमा का अतिक्रमण करती दिख पड़ती है तो यह भी समय के साथ बढ़ने का एक स्वाभाविक मन्जर है। कहीं गयी बात सुनने वाले तक सामान्य अभिधा में ही पहुंच रही है। लक्षणा व व्यंजना की शब्द शक्ति व्यावहारिक बोलचाल की भाषा में गाहे बहाये दिख पड़ती है। चौकसे की लेखनी में जब लाक्षणिकता का पुट पाते है तो यह सुखद अनुभूति होती है।

Scanned by CamScanner

शोध प्रविधि
(RESEARCH METHODOLOGY)

प्रस्तावित शोध अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तावित शोध अध्ययन में जोसेफ गिबाल्डी की पुस्तक एम एल ए हैंडबुक का अनुसरण करते हुए इंडेक्स पद्धति से शोध कार्य करना उचित होगा। यह पद्धति पूर्णरूपेण परीक्षित है तथा आधुनिक अध्येताओं द्वारा निर्देशित विस्तृत रूप से प्राप्त की जाती है। शोध ऐसी मानवीय बौद्धिक क्रिया है जो भावनात्मक या दैवीय गतिविधि नहीं है। साहित्य जो अनुभूति एवं भावनाप्रधान होता है उस शोध की पद्धति संख्यात्मक नही हो सकती वरन् यह गुणात्मक होगा।

इस पद्धति में अध्येता द्वारा जितना संभव हो अधिकाधिक संदर्भ संकलित किए जाते है उन्हें एक साथ तर्कसंगत क्रम में संयोजित किया जाता है और उन के आधार पर उन्हें सम्बंधित कर एक चिंतन प्रस्तुत शोध के रूप में विकसित किया जाता है। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक विधि, मूल्यांकन विधि, योगदान विधि, व्यवहारिक विधि, सर्वेक्षण विधि एवं अनुसंधानात्मक विधि भी काम में ली जाएगी।

आंकड़ो का स्त्रोत

1. **प्राथमिक स्त्रोत** – साहित्य एवं सिनेमा जगत से जुड़े कुछ विषय के लिए नवीन सामग्री संग्रहित की जाएगी। इसके साथ–साथ उपलब्ध प्राचीन व समसामयिक लेखों, ग्रन्थों, पुस्तकों को आधार ग्रन्थ के रूप में उपयोग किया जाएगा।
2. **द्वितीयक स्त्रोत** – सिनेमा जगत से जुड़े हिन्दी भाषा में किये गये पूर्ववती शोधार्थियों के शोध प्रबन्ध। इस सन्दर्भ में हिन्दी पत्र–पत्रिकाएं व प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया व इन्टरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की अध्याय योजना

1. **प्रथम अध्याय : जयप्रकाश चौकसे : व्यक्तित्व**
1.1 जन्म एवं शिक्षा
1.2 परिवार एवं परिवेश
1.3 वैवाहिक जीवन
1.4 पुरस्कार एवं सम्मान

2. **द्वितीय अध्याय : जयप्रकाश चौकसे : कृतित्व एवं साहित्य परिचय**
2.1 आधार ग्रंथ परिचय
2.2 पटकथा लेखन
2.3 स्तम्भ लेखन
2.4 सिनेमा समीक्षा
2.5 उपन्यास लेखन

3. **तृतीय अध्याय : जयप्रकाश चौकसे के रचना संसार में साहित्य, समाज एवं सिनेमा का संबंध**
3.1 हिन्दी सिनेमा और साहित्य
3.2 हिन्दी साहित्य पर आधृत सिनेमा
3.3 हिन्दी एवं पाश्चात्य सिनेमा पर साहित्य का प्रभाव
3.4 सिनेमा के सामाजिक सरोकार
3.5 जयप्रकाश चौकसे चौकसे का हिन्दी साहित्य एवं सिनेमा जगत में स्थान
3.6 जयप्रकाश चौकसे के साहित्य में सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन

4. **चतुर्थ अध्याय : जयप्रकाश चौकसे के साहित्य में नारी विमर्श**
4.1 भारतीय नारी का परम्परागत स्वरूप
4.2 वर्तमान समय में स्त्री का बदलता स्वरूप
4.3 साहित्य एवं सिनेमा में महिलाओं का निरूपण
4.4 जयप्रकाश चौकसे के रचना संसार में नारी विमर्श

5 **पंचम् अध्याय : जयप्रकाश चौकसे के साहित्य में शिल्प विधान**
5.1 कथात्मक संगठन
5.2 चरित्र समायोजन
5.3 कथावस्तु
5.4 कथात्मक तारतम्यता
5.5 भाषात्मक वैशिष्ट्य
5.6 कथन वैविध्य
5.7 बिम्ब एवं प्रतीक विधान

Scanned by CamScanner

6 षष्ठ्म अध्याय : जयप्रकाश चौकसे के सूक्त वाक्य

6.1 सूक्तिपरक वाक्यों का संग्रहण
6.2 संक्षेपण वाक्यों का विश्लेषण
6.3 जयप्रकाश चौकसे के रचना संसार में साहित्यिक अभिव्यक्तिः सूक्त वाक्य
6.4 गंभीर अर्थपरक लघु वाक्यांशों का समग्र अध्ययन

7 सप्तम् अध्याय : वर्तमान संदर्भों में जयप्रकाश चौकसे के रचना संसार की प्रासंगिकता

7.1 सामाजिक क्षेत्र में
7.2 आर्थिक क्षेत्र में
7.3 राजनीतिक क्षेत्र में
7.4 मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में
7.5 धार्मिक क्षेत्र में
7.6 साहित्यिक क्षेत्र में
7.7 सांस्कृतिक क्षेत्र में
7.8 शैक्षिक क्षेत्र में
7.9 भावी पीढ़ी के मार्गदर्शक के रूप में

उपसंहार
परिशिष्ट
संदर्भ ग्रंथ

Scanned by CamScanner

जयप्रकाश चौकसे रचित आधार ग्रन्थ

1 दरावा	मेघा बुक्स	दिल्ली	2007
2 जन नायक राजकपूर	प्राची प्रकाशन	इन्दौर	1991
3 महात्मा गांधी और सिनेमा	मौर्य प्रकाशन	मुंबई	2012
4 परदे के पीछे	भास्कर प्रिंटिंग प्रेस	भोपाल	2004
5 राजकपूर सृजन प्रक्रिया	राजकमल प्रकाशन	नई दिल्ली	1997
6 सिनेमा का सच	प्रवीण प्रकाशन	नई दिल्ली	2011
7 सिनेमा और सितारों का मायाजाल	प्रभात प्रकाशन	दिल्ली	2015
8 ताजमहल बेकरारी का बयान	मेघा बुक्स	दिल्ली	2007

सहायक ग्रंथ

श्री अजय ब्रहमत्मज	सिनेमा की सोच, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2006
श्री अवधनारायण मिश्र	हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	चिंतामणि, मंजूषा लेखक–डॉ. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद
डॉ. अंजली सहाय	पौराणिक कथाएं, पत्रिका प्रकाशन जयपुर, जनवरी 2012.
जैन एवं कुलश्रेष्ठ	हिन्दी निबंध, उपकार प्रकाशन, आगरा
श्री गंगा प्रसाद शर्मा	हिन्दी सिनेमा का सुहाना सफर, डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली
श्री जवरीमल पारख	हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली
दिलचस्प	हिन्दी सिनेमा के 100 वर्ष, भारतीय पुस्तक रामीक्षा,नई दिल्ली 2009
श्री प्रसून सिन्हा	भारतीय सिनेमा, नटराज प्रकाशन नई दिल्ली 2008
श्री फिरोज रंगूनवाला	भारतीय चित्रपट का इतिहास
श्री बच्चन श्रीवास्तव	भारतीय फिल्मों की कहानी
डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी	सामयिक निबंध, उपकार प्रकाशन, आगरा.
श्री महेन्द्र मित्तल	भारतीय चलचित्र
श्री विजय अग्रवाल	सिनेमा और साहित्य, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली
श्री विनोद भारद्वाज	समय और सिनेमा
श्री श्यामसुन्दर दास	साहित्यालोचन
श्री श्यामसुन्दर चौधरी	भारतीय सिनेमा, समाज के आईने में, रण विजय प्रकाशन, नई दिल्ली 1999
श्री श्याम माथुर	सिने पत्रकारिता, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2008
श्री नगेन्द्र,	हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक, नोएडा 2016
श्री भारद्वाज हेतु	साहित्य और संस्कृति, मंथन पब्लिकेशन जयपुर 2001
श्री पालीवाल कृष्णदत्त	हिन्दी आलोचना के नये वैचारिक सरोकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2002

Scanned by CamScanner

पत्र – पत्रिकाएं

आजकल	प्रकाशन विभाग नई, दिल्ली
अक्सर	जयपुर
आलोचना	त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, नई दिल्ली
धर्मयुग	दिल्ली
हंस	अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली
इण्डिया टुडे	नई दिल्ली
इण्डिया टुडे	साहित्यिक विशेषांक, नई दिल्ली
इन्द्रप्रस्थ भारती	हिन्दी अकादमी, नई दिल्ली
मधुमति	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
पूर्वाग्रह	त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका, भोपाल
रसरंग	दैनिक भास्कर, जयपुर
साहित्य अमृत	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
साहित्यांचल	भीलवाड़ा
समय माजरा	जयपुर
सम्बोधना	कांकरोली, राजसमंद
सामयिक वार्ता	दिल्ली
वागर्थ	भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
वाक्	वाणि प्रकाशन, नई दिल्ली
वसुधा	भोपाल

Scanned by CamScanner

समाचार पत्र

दैनिक भास्कर, जयपुर

हिन्दुस्तान, दिल्ली

इन्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री

जनसत्ता, दिल्ली

पंजाब केसरी

राजस्थान पत्रिका, जयपुर

समस्त प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक मीडिया

राष्ट्रीय सहारा

हिन्दी जर्नल

आन्वीक्षिकी, वाराणसी। (उतर प्रदेश)

इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, 169 सी – 11 सेक्टर 3 रोहिणी, दिल्ली।

शोधश्री, 54 अ, जवाहर कोलोनी, जयपुर

शोध गंगा, 'ए रिजर्वोयर आफ इंडियन थीसिस', गांधीनगर गुजरात।

शोध गंगोत्री, गांधीनगर गुजरात।

शोध धारा, शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, औराई, जालौन। (उतर प्रदेश)

शोध संचयन, 409, शांतिवन, 2 अ/244 अ, आजाद नगर, कानपुर।

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ

(LIST OF REFERENCES CITED)

1. जयप्रकाश चौकसे, स्तम्भ 'परदे के पीछ' *'सिनेमा में इन्दौर का योगदान':* दैनिक भास्कर, 2005 पृष्ठ सं. 10.
2. मुंशी प्रेमचन्द, *प्रेम द्वादशी* (कहानी संग्रह): साहित्यागार, जयपुर 1991 आमुख पृष्ठ सं.3.
3. डॉ. ऋता दीक्षित, एटा, उत्तर प्रदेश : शोधश्री, 2016. 21 (4) 21–24.
4. निदा फाजली, *'सिनेमा और सितारों का जाल'* : प्रभात प्रकाशन : 2015 पृष्ठ सं. 2.
5. निदा फाजली, *'सिनेमा का सच'* प्रवीण प्रकाशन नई दिल्ली : 2011 पृष्ठ सं. 13.
6. अनिशा सिवाच, *'भारतीय संस्कृति, सिनेमा और हिन्दी'* (वैश्विक संदर्भ में), इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, नवम्बर 2016. 2(6) 47–48.
7. जयप्रकाश चौकसे, *'दराबा'* प्रस्तावना : मेघा बुक्स प्रकाशन दिल्ली : 2007 पृष्ठ सं. 3
8. कु. चारु यादव– जे.एस. हिन्दु कॉलेज, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, *'साहित्य में जीवन मूल्य'* इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, सितम्बर 2016. 2(5) 71–73.
9. जयप्रकाश चौकसे, *'ताजमहल बेकरारी का बयान'* प्रस्तावना : मेघा बुक्स प्रकाशन दिल्ली : 2007 पृष्ठ सं. 5.
10. जय प्रकाश चौकसे, *'महात्मा गांधी और सिनेमा'* समर्पण : मौर्य प्रकाशन मुम्बई 2012 पृष्ठ सं. 3
11. जयप्रकाश चौकसे, *'सिनेमा और सितारों का मायाजाल'* समर्पण : प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2015 पृष्ठ सं. 5
12. डॉ. मनोहर चन्द्र जोशी, नैनीताल (उत्तराखण्ड) *'महिला सशक्तिकरण : एक मिथक'* शोध श्री, 2016. 19 (2) 38–47.
13. जयप्रकाश चौकसे, *'दराबा'* प्रस्तावना : मेघा बुक्स प्रकाशन दिल्ली : 2007 पृष्ठ सं. 5
14. डॉ. संदेश गौतम, *'हिन्दी फिल्मी गीतों का साहित्यिक एवं सांगीतिक अध्ययन',* 2012 पृष्ठ सं. 137.
15. जय प्रकाश चौकसे, *'सिनेमा और सितारों का मायाजाल'* लेखक का बयान : प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2015 पृष्ठ सं. 9–10.
16. भावना दहिया *'हिन्दी साहित्य सामाजिक व्यवस्था का वास्तविक परिदृश्य'* : इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च : मार्च 2016. 2(2) 31–33.

Scanned by CamScanner

17 दीपक राय, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विवि चित्रकूट, सतना, मध्यप्रदेश *'सोशल मीडिया के उपयोग के बाद युवाओं की पुस्तकों से बढ़ती दूरी का अध्ययन*, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, नवम्बर 2016. 2(6) 32–40.

18 डॉ. संदेश गौतम, *'हिन्दी फिल्मी गीतों का साहित्यिक एवं सांगीतिक अध्ययन*, 2012 पृष्ठ स. 168.

19. प्रताप अनम, *'कहानियां कहावतों की'* भूमिका नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया दिल्ली 2012 पृष्ठ सं. 9.

20. डॉ. तारा सिंह, *'भारतीय सभ्यता और संस्कृति'* : साहित्यांचल पत्रिका : भीलवाड़ा 2014. पृष्ठ सं. 10.

21. दर्शन सिंह रावत, *'भाषाओं पर संकट'* : साहित्यांचल पत्रिका : भीलवाड़ा 2013. पृष्ठ सं. 31.

Scanned by CamScanner